भवन निर्माण में वास्तुशास्त्र की उपयोगिता

श्री राकेश कुमार
वैज्ञानिक सी'

'वास्तु' उस स्थान को कहते हैं जिसपर कोई भवन खड़ा हुआ हो या जो भवन बनाने के लिए उपयुक्त जगह हो। वास्तुशास्त्र ज्योतिषशास्त्र का ही एक भाग है एवं इसका भवन में रहने वाले प्राणियों को ऐश्वर्य, सुख, शान्ति, सिद्धि तथा समृद्धि देने में विशेष महत्व है। वास्तुशास्त्र प्राचीन विद्वानों द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों पर आधारित है। इसमें भूखण्ड को अनुकूल बनाने, घर के विभिन्न भागों के स्थान, व्यापारिक, उद्योग, घर बनाने की विधियों, कृषि भूमि का वास्तु तथा अन्य भवन निर्माण के विषय निहित हैं। इस लेख में वास्तुशास्त्र के अनुसार भूखण्डों के आकार एवं भवन निर्माण के विषय में वर्णन किया गया है :

भू-खण्डों के आकार व फल

वर्गाकार	:	धनलाभ, ऐश्वर्य, आरोग्य
आयताकार	:	सिद्धिदायक
गोलाकार	:	धनलाभ, ज्ञानलाभ, सम्मान वृद्धि
त्रिकोणाकार	:	राजभय, धन हानि
सिंहमुखी	:	व्यापार प्रतिष्ठान में धनलाभ परन्तु आवास हेतु श्रेष्ठ नहीं।
गौमुखी	:	आवास हेतु शुभ, परन्तु व्यापार प्रतिष्ठान हेतु श्रेष्ठ नहीं।

सामान्यत: आकार की दृष्टि से गृह निर्माण हेतु वर्गाकार भूखण्ड सर्वश्रेष्ठ होता है। आयताकार भूखण्ड श्रेष्ठ एवं वर्त्ताकार, गौमुखाकार, चतुष्कोणाकार, षट्कोणाकार तथा अष्टकोणाकार भूखण्ड भी शुभ होते हैं। यदि भूखण्ड उत्तर - पूर्व दिशा में बढ़ा हुआ हो तो यह शुभ फलदायक होता है तथा सुख एवं शान्ति प्रदान करता है।

मुख्य द्वार

घर का मुख्य द्वार उत्तर, पूर्व अथवा उत्तर - पूर्व में हो तो इसे सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। वास्तुशास्त्र में मुख्य द्वार का विशेष महत्व है।

भूखण्ड तथा मार्ग

जिस भूखण्ड के चारों ओर मार्ग हो उसे सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। यदि भूखण्ड के

पूर्व एवं उत्तर की ओर मार्ग हो तो यह श्रेष्ठ माना जाता है।

भूखण्ड में भवन निर्माण का स्थान

भूखण्ड में गृह निर्माण के लिए दक्षिण एवं दक्षिण-पश्चिम का स्थान श्रेष्ठ माना जाता है। उत्तर तथा पूर्व दिशा में खाली स्थान रखना उत्तम माना जाता है। दक्षिण दिशा में न्यूनतम रिक्त स्थान रखना अच्छा रहता है।

जल स्थल, कुआँ, टयूबवेल या हैण्ड पम्प

उपरोक्त के लिए उत्तर - पूर्व का स्थान सर्वोपरि रहता है परन्तु छत पर पानी की टंकी पश्चिम तथा दक्षिण - पश्चिम में शुभ रहती है। स्नानघर पूर्व दिशा में श्रेष्ठ माना गया है। यदि शौचालय स्नानघर के साथ बनाया गया है तो सेप्टिक टैंक उत्तर - पश्चिम या पश्चिम दिशा में बनाना चाहिए।

रसोईघर

रसोईघर दक्षिण-पूर्व दिशा में बनाना शुभ एवं फलदायक है। रसोईघर में पानी का नल दक्षिण-पूर्व भाग में उत्तम रहता है। खाने के सामान को रखने का स्थान दक्षिण में रहना चाहिए। खाना बनाते समय गृहणी का मुँह पूर्व दिशा में रहना शुभ माना गया है।

शयनकक्ष

घर में शयन कक्ष दक्षिण एवं दक्षिण-पश्चिम में श्रेष्ठ माना गया है। सोते समय सिर दक्षिण की ओर रखना तथा पैर उत्तर दिशा में रखना अच्छा रहता है।

पूजा स्थल

पूजा घर उत्तर - पूर्व में श्रेष्ठ रहता है। पूजा करते समय मुँह का पूर्व दिशा में रहना शुभ एवं फलदायक माना गया है।

वाहन स्थल/गैराज

उत्तर - पश्चिम भाग में गैराज बनाना उत्तम रहता है।

सीढ़ियां

सीढ़ियों का निर्माण दक्षिण में या दक्षिण - पश्चिम दिशा में करना चाहिए। सीढ़ियों

की संख्या विषम रखनी चाहिए ।

भण्डार/स्टोर

भण्डार या स्टोर बनाने के लिए भवन का दक्षिण, पश्चिम या दक्षिण - पश्चिम भाग शुभ फलदायक रहता है ।

रिक्त स्थल

रिक्त स्थल उत्तर, पूर्व या उत्तर - पूर्व भाग में रखना श्रेष्ठ रहता है । यदि पश्चिम दिशा में रिक्त स्थल हो तो ऊंचे-ऊंचे पेड़ लगाने चाहिए ।

स्वागत कक्ष

मेहमानों के लिए स्वागत कक्ष उत्तर - पश्चिम या उत्तर - पूर्व एवं पूर्व भाग के बीच में बनाना चाहिए ।

अध्ययन कक्ष

भवन के उत्तर - पूर्व कोण में पूजा गृह के साथ अध्ययन कक्ष बनाना श्रेष्ठ रहता है ।

वास्तुशास्त्र एक अत्यन्त ही विस्तृत एवं गूढ़ विषय है । इसके सिद्धान्तों तथा उपायों को कुछ शब्दों में लिखना कदापी संभव नहीं है । यह अनकों बातों, जैसे की भूमि लक्षण, भूमि चयन, भूमि का प्रकार, भूखण्डों के आकार, शल्य एवं शल्य शोधन, भवन के अनकों अंगों का स्थान, भूमि क्रय-विक्रय करने के मूहर्त, घर निर्माण का मूहर्त, गृह, व्यापार, औद्योगिक इकाई, कृषि, सभागार, आन्तरिक सजावट, गृह प्रवेश, पूजा स्थल, समूह आवास, बहुमंजिले भवनों आदि के निर्माण तथा उन्हें वास्तुशास्त्र को सिद्धातों पर सुधारने का विज्ञान है । इस लेख में वास्तुशास्त्र के कुछ मुख्य तथ्य दिये गये हैं । आज के आधुनिक युग में जहां पर बड़े - बड़े शहरों में लाखों एवं करोड़ों की संख्या में लोग रहते हैं तथा भूमि एवं भवन अत्यन्त मंहगे होते जा रहे हैं, वास्तुशास्त्र के सिद्धान्तों को किस स्तर तक अपनाया जा सकता है तथा इसे कितना व्यावहारिक बनाया जा सकता है यह एक विचार करने का विषय है ।

***